अप्रैल, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 4

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

तिब्बत समर्थक समूहः शीर्ष तिब्बती लामा की मृत्यु की परिस्थितियों की पारदर्शी जांच होना जरूरी

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

अप्रैल, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 4

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

पहलगाम आतंकी हमले पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने भारत के साथ एकजुटता जताई

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचारों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

1.परम पावन दलाई लामा ने परम पावन पोप फ्रांसिस के निधन पर शोक व्यक्त किया 2

2.डच संसद में तिब्बतियों के अधिकार के पक्ष में ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित 2

3.सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का शिमला दौरा, माननीय मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से मुलाकात की 3

4.पहलगाम आतंकी हमले पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने भारत के साथ एकजुटता जताई 4

5.सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने आयुष मंत्री से मुलाकात की, टीआरपी २०१४ के तहत पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा के लिए समर्थन मांगा 4

6.कलोन डोल्मा ग्यारी ने धर्मशाला में तिब्बतियों के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए मैक्लोडगंज के स्टेशन हाउस ऑफिस से बातचीत की 5

7.कलोन नोरज़िन डोल्मा परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन से पहले नई दिल्ली में राजनयिक संपर्क कार्यक्रम में शामिल हुईं 5

8.कलोन डोल्मा ग्यारी ने तिब्बती शरणार्थियों की चिंताओं के समाधान के लिए केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू से मुलाकात की 6

9.तुलकू हुंगकर दोरजे की संदेहास्पद मौत पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की प्रेस कॉन्फ्रेंस 6

10.प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप ने जीफेंग बुकस्टोर में वॉयस फॉर द वॉयसलेस पर भाषण दिया 8

11.तुलकु रिग्जिन हुंगकर दोरजे रिनपोछे की संदिग्ध मौत पर निर्वासित तिब्बती संसद का बयान 9

12.ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत ने नई दिल्ली स्थित संविधान सदन में बैठक बुलाई 10

13.ब्रिटिश प्रतिनिधि शेरिंग यांगकी ने मिल्टन कीन्स में १२वें वार्षिक तिब्बती ध्वजारोहण समारोह में भाग लिया 11

14.केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने पहलगाम पीड़ितों से एकजुटता दर्शाते हुए प्रार्थना समारोह आयोजित किया 12

15.यूरोपीय संसद ने ११वें पंचेन लामा की रिहाई का आह्वान किया 12

16.एनसीएससी ने उग्यूर, तिब्बती और ताइवानी समूहों को निशाना बनाने वाले स्पाइवेयर के तकनीकी विवरण का खुलासा किया 13

17.तिब्बत समर्थक समूह: शीर्ष तिब्बती लामा की मृत्यु की परिस्थितियों की पारदर्शी जांच होना जरूरी 14

18.तिब्बत में दूरसंचार के लिए प्रताड़ना 15

19.चीन ने हालिया श्वेत पत्र में तिब्बत का नाम ही मिटा दिया 15

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

ग्यारहवें पंचेन लामा के बारे में यथाशीघ्र जानकारी दे चीन सरकार

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

साम्यवादी चीन सरकार ग्यारहवें पंचेन लामा के बारे में मई, 1995 से लगातार जानकारी छिपा रही है। इससे सभी तिब्बती एवं तिब्बत समर्थक चिंतित हैं। पंचेन लामा गेदुन चुकी न्यीमा के जन्मदिन 25 अप्रैल, 2025 को आयोजित कार्यक्रमों में यही चिंता छाई रही। अब से 36 वर्ष पूर्व 1989 में जन्मे पंचेन लामा का चीन सरकार ने 17 मई, 1995 को अपहरण कर लिया था। तब वे मात्र छः वर्ष के थे। उसने बालक पंचेन लामा के साथ उनके परिजनों तथा गुरु का भी अपहरण कर लिया था।

परपावन दलाई लामा और कर्मापा लामा के समान ही पंचेन लामा तिब्बती बौद्ध परंपरा में बहुत ही महत्वपूर्ण धर्मगुरु हैं। इन्हें भी पूर्व पंचेन लामा का अवतार माना जाता है। गेदुन चुकी न्यीमा पंचेन लामा के ग्यारहवें अवतार हैं। तिब्बती परंप. राओं के अनुरूप चयन प्रक्रिया का पालन करते हुए इन्हें पंचेन लामा का अवतार बताया गया था। इसकी घोषणा 14 मई, 1995 को वर्तमान 14वें दलाई लामा तेंजिन ग्यात्सो ने की थी। इस घोषणा के तीन दिन पश्चात ही 17 मई को साम्राज्यवादी चीन सरकार ने उन्हें गायब कर दिया था।

स्वतंत्र देश तिब्बत पर 1959 में अवैध नियंत्रण कर चुकी चीन सरकार साजिशपूर्वक सभी महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पदों को नियंत्रित करने में लगी है। तिब्बती धार्मिक परंपरानुसार चयनित कर्मापा के 17वें अवतार ओग्येन त्रिनले दोर्जे को सिर्फ 14 वर्ष की उम्र में तिब्बत से भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी थी। वहाँ उनकी जान को खतरा था। ऐसी ही संकटपूर्ण परिस्थिति में 1959 में दलाई लामा ने तिब्बत से भारत आकर अपनी जीवन–रक्षा की थी।

साम्यवादी चीन सरकार धर्म तथा अध्यात्म को समाज के लिये खतरनाक मानती है। वह धर्म को समाप्त करने के पक्ष में है। आश्चर्यजनक रूप से तिब्बत के मामले में वह अपनी धर्म संबंध ी सोच में अवसरवादी बदलाव ला चुकी है। इसी का परिण ाम है कि वह दलाई लामा, पंचेन लामा तथा कर्मापा लामा के पदों पर अपनी पसंद के लोगों को लाना चाहती है। इन पदों पर आध्यात्मिक गुरुओं के चयन का अधिकार सिर्फ तिब्बती बौद्ध विद्वानों, धर्मगुरुओं एवं विशेषज्ञों को है। वे ही पारंपरिक तरीके से अपने दायित्व को निभा सकते हैं। इस प्रक्रिया में ध ार्म विरोधी अर्थात् विधर्मी साम्यवादी चीन सरकार को कोई अधिकार नहीं है। इसमें उसका अनैतिक एवं अवांछित हस्तक्षेप पूर्णतः अस्वीकार है।

चीन सरकार अभी कुछ वर्षों से आगामी दलाई लामा की नियुक्ति के लिये साजिष रच रही है। वर्तमान दलाई लामा के पुनर्जन्म अर्थात् उनके अवतार का पता लगाने का कार्य करने से चीन को रोकने के लिये तिब्बत संबंधी अपनी नीति में अमरी. की सरकार ने चीन सरकार को स्पष्ट चेतावनी दे दी है। सभी तिब्बत समर्थक संगठनों, सरकारों एवं विचारकों को भी अमरीकी नीति के समान इस संबंध में अपनी नीति का निर्धारण करना चाहिये। चीन सरकार वास्तविक दलाई लामा, पंचेन लामा और कर्मापा लामा की जगह अपने नकली लोगों को नियुक्त कर सकती है। इससे विष्व समुदाय और विषेषकर तिब्बती समुदाय में भ्रमपूर्ण स्थिति हो सकती है। चीन के ऐसे गलत प्रयासों को प्रभावी उपायों से रोकना होगा। तिब्बत की धार्मिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिये ऐसा करना जरूरी है।

ग्यारहवें पंचेन लामा के अपहरण की पृष्ठभूमि यही है। चीन की साम्यवादी सरकार को विष्वास था कि दलाई लामा द्वारा घोषित पंचेन लामा के अवतार गेदुन चुकी न्यीमा बहुत कम समय में तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों के बीच श्रद्धा–केन्द्र बन जायेंगे। धार्मिक व्यवस्था में उनका प्रभाव बढ़ने से तिब्बत के अंदर धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार पर नियंत्रण जारी रखना मुष्किल हो जायेगा। इसीलिये उसने उनका बाल्यावस्था में ही अपहरण कर लिया। अपेक्षा है और मांग भी है कि वह गेदुन चुकी न्यीमा के बारे में प्रामाणिक जानकारी यथाशीघ्र उपलब्ध कराये। उनकी षिक्षा–दीक्षा, आध्यात्मिक कार्य, आच. ार–विचार–व्यवहार तथा उनके परिजनों एवं गुरु के बारे में विष्वसनीय, ठोस और तर्कसंगत सूचनायें एवं चित्रादि उपलब्ध कराई जायें।

तिब्बत में चीन सरकार धार्मिक केन्द्रों का व्यापक पैमाने पर विध्वंस कर रही है। सभी प्रमुख धार्मिक–आध्यात्मिक संस्थान, मठ–मंदिर तथा स्थल नष्ट किये जा चुके हैं। वहाँ अन्य संस्थ. ान एवं कार्यालय चल रहे हैं। तिब्बती नववर्ष लोसर मनाने, अपने धर्मगुरुओं की तस्वीरें रखने, बौद्ध पर्व–उत्सव मनाने तथा सांस्कृतिक कला आदि के प्रदर्षन पर रोक है। तिब्बती बच्चों को चीनी विद्यालयों–छात्रावासों में रखकर उनका चीनी. करण किया जा रहा है। ऐसे बच्चे अपनी तिब्बती संस्कृति को छोड़ चीनी संस्कृति पर गर्व करने लगे हैं।

मानसिक गुलाम बनाने का जो कार्य तिब्बत में चीन सरकार कर रही है वैसा ही भारत में मुगलों, अंग्रेजों और मार्क्सवादि. दयों ने किया था। उसी का परिणाम है कि स्वतंत्र भारत में भी कई लोगों एवं संस्थाओं को गुलामी की याद दिलाने वाले नाम, स्थान, निषान, नियम–कानून तथा इतिहास बहुत अधिक प्रिय हैं। इनमें किसी भी बदलाव का वे पूर्णतः विरोध करते हैं। वे इसके लिये न्याय प्रणाली और मीडिया के साथ–साथ भारत विरोधी शक्तियों का भी सहयोग लेते–देते हैं। तिब्बती लोगों को मानसिक गुलामी से बचाने के लिये चीनी षड्यंत्र को विफल करना होगा। तिब्बत सिर्फ देष नहीं, एक दर्षन है। शांति, अहिंसा, करुणा, मैत्री आदि मानवीय मूल्यों से भरपूर बौद्ध दर्षन ही इसकी पहचान है। विस्तारवादी चीनी षड्यंत्र से इसे बचाये रखना संपूर्ण विष्व का दायित्व है।

◆ 1.परम पावन दलाई लामा ने परम पावन पोप फ्रांसिस के निधन पर शोक व्यक्त किया

२१ अप्रैल, २०२५

धर्मशाला: परम पावन दलाई लामा ने परम पूज्य लियोपोल्डो गिरेली, भारत के अपोस्टोलिक नन्सियो को पत्र लिखकर यह जानकर दुख व्यक्त किया है कि परम पावन पोप फ्रांसिस का निधन हो गया है। उन्होंने लिखा कि वे अपने आध्यात्मिक भाइयों, बहनों और दुनिया भर में अपने अनुयायियों के लिए प्रार्थना और संवेदना व्यक्त करते हैं।

उन्होंने कहा, "परम पावन पोप फ्रांसिस ने खुद को दूसरों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया," "अपने कार्यों से लगातार यह प्रकट करते रहे कि कैसे एक सरल, लेकिन सार्थक जीवन जिया जाए। हम उन्हें जो सबसे अच्छी श्रद्धांजलि दे सकते हैं, वह है एक गर्मजोशी से भरा व्यक्ति बनना, जहाँ भी और जिस तरह से भी हम कर सकते हैं, दूसरों की सेवा करना।"

धर्मशाला में मुख्य तिब्बती मंदिर, त्सुगलागखांग में तिब्बती समुदाय द्वारा एक स्मारक सेवा आयोजित की जा रही है।

परम पावन ने अपने पत्र को "मेरी प्रार्थनाओं के साथ" समाप्त किया।

◆ 2.डच संसद में तिब्बतियों के अधिकार के पक्ष में ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित

१६ अप्रैल, २०२५

ब्रुसेल्स। डच प्रतिनिधि सभा ने तिब्बत के पक्ष में तीन प्रस्तावों को एकीकृत कर १५ अप्रैल २०२५ को एक प्रस्ताव पारित किया। यह घटना लंबे समय के बाद डच संसद में एक महत्वपूर्ण घटना को दर्शाता है। यह प्रस्ताव तिब्बत में मानवाधिकार मुद्दों को लेकर नीदरलैंड की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

संकल्प के प्रमुख प्रस्ताव निम्नलिखित हैं :-

- चीन तिब्बत में लगातार मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहा है। चीन के शासन के तहत विशेष रूप से धार्मिक और नस्लीय अल्पसंख्यकों (जैसे उग्यूर, तिब्बती, मंगोल और अन्य) को भेदभाव, उत्पीड़न, अपराधीकरण, पुनः शिक्षा कार्यक्रम और कारावास जैसे दमनकारी कार्रवाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

- इस तरह के उत्पीड़क घटनाओं को देखते हुए तिब्बत के लिए यूरोपीय संघ के विशेष प्रतिनिधि की नियुक्ति और अमेरिका के 'रिज़ोल्व तिब्बत ऐक्ट' की तर्ज पर एक संयुक्त यूरोपीय संघ-तिब्बत रणनीति पर जोर देने और यूरोपीय संघ-चीन शिखर सम्मेलन से पहले चैंबर को इसके बारे में सूचित करने का आह्वान डच मंत्रिमंडल से किया जाता है।

- ध्यान देने की बात है कि परम पावन दलाई लामा इस वर्ष अपना ९०वां जन्मदिन मनाएंगे। इसे देखते हुए तिब्बती बौद्ध धर्म के प्रमुख आध्यात्मिक धर्मगुरु के तौर पर उनके उत्तराधिकारी के चयन के बारे में चर्चा शुरू हो गई है। ऐसे में तिब्बतियों और निर्वासित तिब्बती सरकार के अंदर उनके उत्तराधिकारी की नियुक्ति में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के आशंकित हस्तक्षेप को लेकर चिंताएं व्याप्त हैं। प्रस्ताव में कहा गया है कि चूंकि तिब्बतियों को अपने आध्यात्मिक नेता के चयन संबंधी रीति-रिवाजों को तय करने का स्वंय का अधिकार है और इसमें वे किसी तरह का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं कर सकते है। ऐसे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को दलाई लामा के उत्तराधिकारी के चयन में कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इसलिए डच कैबिनेट से द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों पर इस मुद्दे को जोरशोर से उठाने का का अनुरोध किया जाता है।

ऐसा लगता है कि डच संसद के इस प्रस्ताव में तिब्बत की स्थिति को लेकर बढ़ती अंतरराष्ट्रीय चिंता की झलक है। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अक्तूबर २०२४ में नीदरलैंड का दौरा किया था। यात्रा के दौरान, उन्हें संसद की विदेश मामलों की समिति की औपचारिक सुनवाई के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए उन्होंने तिब्बत में चीन के जारी दमन, परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म में चीनी हस्तक्षेप आदि जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर डच सांसदों के साथ बातचीत की। इस बातचीत ने डच प्रतिनिधि सभा को इस प्रस्ताव के साथ कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया है।

इसके अतिरिक्त १० मार्च २०२५ को हेग में आयोजित 'यूरोप स्टैंड विद तिब्बत (यूरोप तिब्बत के साथ खड़ा है)' शीर्षक से आयोजित पांचवीं रैली के अवसर पर इंटरनेशनल कंपेन फॉर

तिब्बत के अध्यक्ष रिचर्ड गेरे ने तिब्बती प्रतिनिधिमंडल के साथ मिलकर कई डच सांसदों के साथ बातचीत की थी। इसमें ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग भी शामिल थे।

संसदीय प्रयासों के साथ-साथ तिब्बती, उग्यूर, हांगकांग और दक्षिणी मंगोलिया मूल के समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले गठबंधन ने सांसदों पर लगातार दबाव बनाए रखने में योगदान दिया है।

डच प्रतिनिधि सभा में सांसद जान पैटरनोटे, ईसा कहरमन, डी.जी. बोसविज्क, ई. वैन डेर बर्ग, एस.आर.टी. वैन बार्ले, टी.एम.टी. वैन डेर ली, डी.जी.एम. सीडर, डॉन सीडर, क्रिस स्टॉफर, मार्टिन ओस्टेनब्रिंक और जोई एनबी द्वारा पेश किए गए प्रस्तावों को भारी समर्थन मिला।

प्रस्ताव का स्वागत करते हुए ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग ने डच संसद को उसके सैद्धांतिक रुख के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, 'यह प्रस्ताव हर जगह तिब्बतियों के लिए, खास तौर पर तिब्बत के अंदर रहने वाले तिब्बतियों के लिए उम्मीद की किरण है। हम डच प्रतिनिधि सभा के प्रति बहुत आभारी हैं कि उन्होंने हमारी पीड़ा को समझा और हमारे साथ खड़े रहे। नीदरलैंड जैसे लोकतांत्रिक देशों का समर्थन हमारे शांतिपूर्ण मुक्ति साधना को जारी रखने के हमारे संकल्प को और मजबूत करता है।'

◆ 3.सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का शिमला दौरा, माननीय मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से मुलाकात की

१८ अप्रैल, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन में वर्तमान में गृह विभाग का भी कालोन (मंत्री) के रूप में जिम्मा संभाल रहे सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने शिमला, कामराव और सतौन में तिब्बती बस्तियों का दौरा किया। अपनी आधिकारिक यात्रा के दूसरे चरण की शुरुआत में सिक्योंग १६ अप्रैल २०२५ की शाम को शिमला पहुंचे। वहां पर मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी (सीआरओ) सावांग फुंटसोक के नेतृत्व में तिब्बती समुदाय ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

अगले दिन सिक्योंग ने कार्यक्रम की शुरुआत रंगजेन कैंप के दौरे से की। वह इसके बाद जोनांग तकतेन फुंटसोक चोलिंग में रुके, जहां उन्होंने पवित्र मंदिरों में पूजा-अर्चना की और चल रही निर्माण परियोजना का निरीक्षण किया। इसके बाद सिक्योंग ने बुजुर्ग तिब्बतियों से बातचीत करने के लिए नामग्याल मठ स्थित वृद्धाश्रम का दौरा किया। उसके बाद वह सांग्ये चोलिंग तिब्बती आवासीय क्षेत्र में बसने वालों से मिलने गए।

दोपहर बाद सिक्योंग ने हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से उनके कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ भूमि संबंधी मुद्दों और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन से संबंधित अन्य मामलों पर चर्चा की। जवाब में माननीय मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि इस मामले पर राज्य मंत्रिमंडल द्वारा विचार-विमर्श किया जाएगा। सिक्योंग ने माननीय मुख्यमंत्री को धर्मशाला में परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन समारोह में शामिल होने का निमंत्रण भी दिया।

इस बैठक में गृह विभाग के सचिव पाल्डेन धोंडुप, दलाई लामा ट्रस्ट के सचिव जम्फेल ल्हुंडुप, सीआरओ शिमला के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी सावांग फुंटसोक, गृह विभाग की अतिरिक्त सचिव ताशी देकि और मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी की भूमिका संभालने के लिए नामित उपसचिव लखपा शेरिंग ने भाग लिया। तिब्बती प्रतिनिधिमंडल की सहायता के लिए बैठक में उत्तराखंड के पूर्व मुख्य सचिव आईएएस (सेवानिवृत्त) श्री सुभाष कुमार तथा धर्मशाला निवासी वास्तुकार अमरदीप ने भी भाग लिया।

इसी तरह, सिक्योंग ने सचिव पाल्डेन धोंडुप, अतिरिक्त सचिव ताशी देकि, सीआरओ सावांग फुंटसोक, नए सीआरओ लखपा शेरिंग और सीआरओ के सचिव देचेन रबजाम के साथ हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव श्री प्रबोध सक्सेना से भी मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य सचिव को राज्य में तिब्बती समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों से अवगत कराया और संभावित समाधानों पर बातचीत की।

◆ 4.पहलगाम आतंकी हमले पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने भारत के साथ एकजुटता जताई

२४ अप्रैल, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले पर गहरा दुख व्यक्त किया है। इस हमले में २६ लोगों की जान चली गई और अनेक लोग घायल हो गए।

एक्स प्लेटफॉर्म (पूर्व में ट्विटर) पर सार्वजनिक किए गए अपने आधिकारिक बयान में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने कहा, 'हम कश्मीर में हाल ही में हुए आतंकी हमले से बहुत दुखी हैं। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की ओर से हम पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं। हम घायलों के शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं। इस कठिन समय में हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं भारत के लोगों और सरकार के साथ हैं।'

सिक्योंग ने आगे तिब्बती समुदाय की ओर से भारत के लोगों और सरकार के साथ एकजुटता व्यक्त की। साथ ही इस कठिन समय में प्रार्थना और धैर्य बंधाने के लिए भारत के लोगों के साथ शामिल हुए।

◆ 5सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने आयुष मंत्री से मुलाकात की, टीआरपी २०१४ के तहत पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा के लिए समर्थन मांगा

२४ अप्रैल, २०२५

नई दिल्ली। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के स्वास्थ्य विभाग के वर्तमान कालोन (मंत्री) का भी जिम्मा संभाल रहे सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २३ अप्रैल २०२५ को आयुष (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी मंत्रालय) के माननीय मंत्री श्री प्रतापराव गणपतराव जाधव से शिष्टाचार भेंट की और पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा को आधुनिक बनाने और इसके चिकित्सकों का समर्थन करने के लिए चल रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला।

सिक्योंग के साथ परम पावन दलाई लामा ब्यूरो के प्रतिनिधि जिग्मी जुंगने, स्वास्थ्य सचिव जम्पा फुंटसोक, तिब्बती मेडिकल एंड एस्ट्रो इंस्टीट्यूट के कार्यकारी निदेशक थुप्टेन शेरिंग और केंद्रीय तिब्बती चिकित्सा परिषद (सीसीटीएम) के सचिव मेनपा थुप्टेन कुनफेल भी शामिल थे।

बैठक का मुख्य एजेंडा तिब्बती पुनर्वास नीति (टीआरपी) २०१४ के प्रावधानों के तहत तिब्बती सोवा-रिग्पा चिकित्सकों के लिए समर्थन सुनिश्चित करना था।

◆ 6.कलोन डोल्मा ग्यारी ने धर्मशाला में तिब्बतियों के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए मैक्लोडगंज के स्टेशन हाउस ऑफिस से बातचीत की

०३ अप्रैल, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सुरक्षा विभाग की कलोन (मंत्री) डोल्मा ग्यारी ने आज ०३ अप्रैल को धर्मशाला के मैक्लोडगंज के स्टेशन हाउस ऑफिसर (एसएचओ) इंस्पेक्टर सुरेन्द्र ठाकुर से मुलाकात की और क्षेत्र में निर्वासित तिब्बतियों के सामने आने वाली समस्याओं और चुनौतियों पर चर्चा की।

बैठक के दौरान कलोन डोल्मा ग्यारी ने तिब्बती समुदाय की सुरक्षा के बारे में चिंता जताई और स्थानीय कानून प्रवर्तकों और तिब्बती प्रशासन के बीच मजबूत सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

चर्चा में निर्वासित तिब्बतियों के लिए एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण वातावरण सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय अधिकारियों और तिब्बती प्रशासन के बीच सहयोग को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

एसएचओ सुरेन्द्र ठाकुर ने उठाई गई चिंताओं को दूर करने में पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया और क्षेत्र में कानून और व्यवस्था को बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। दोनों पक्षों ने तिब्बती समुदाय को प्रभावित करने वाली किसी भी चुनौती को हल करने के लिए आपसी समन्वय में काम करने पर सहमति व्यक्त की।

यह भागीदारी स्थानीय कानूनी प्राधिकारियों के साथ सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा देते हुए निर्वासित तिब्बतियों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की सतत प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

◆ 7.कलोन नोरज़िन डोल्मा परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन से पहले नई दिल्ली में राजनयिक संपर्क कार्यक्रम में शामिल हुईं

१७ अप्रैल, २०२५

नई दिल्ली। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) की कलोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा ने १५ अप्रैल २०२५ से नई दिल्ली में राजनयिक संपर्क कार्यक्रम शुरू किया।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान कलोन ने सात राजदूतों, उच्चायुक्तों या प्रभारी अधिकारियों, मिशन के पांच उप प्रमुखों

और तीन महाद्वीपों के देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले आठ दूतावासों या उच्चायोगों के अनके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठकें कीं।

इन कार्यक्रमों के दौरान कलोन ने परम पावन दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में आगामी कार्यक्रमों की शृंखला के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ये समारोह भारत के धर्मशाला में होने वाले हैं और पूरे देश और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाएंगे।

अपनी चर्चाओं में कलोन ने तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन की स्थायी ताकत पर जोर दिया तथा बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्यों के बीच इसके लचीलेपन पर प्रकाश डाला। इन सभी बैठकों में कलोन नोरज़िन डोल्मा के साथ प्रतिनिधि जिग्मे जुंगने और सचिव धुंडुप ग्यालपो भी मौजूद रहे

◆ 8.कलोन डोल्मा ग्यारी ने तिब्बती शरणार्थियों की चिंताओं के समाधान के लिए केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू से मुलाकात की

१७ अप्रैल, २०२५

नई दिल्ली। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सुरक्षा विभाग की कलोन (मंत्री) डोल्मा ग्यारी ने इस सप्ताह की शुरुआत में नई दिल्ली में भारत के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री माननीय किरेन रिजिजू से मुलाकात की।

इस चर्चा के दौरान कलोन ने इन प्रमुख मुद्दों का समाधान करने में मंत्री से निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन की अपेक्षा की। साथ ही दशकों से तिब्बती लोगों को भारत सरकार के दीर्घकालिक और उदार समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

◆ 9.तुलकू हंगकर दोरजे की संदेहास्पद मौत पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की प्रेस कॉन्फ्रेंस

८ अप्रैल, २०२५

धर्मशाला। 08 अप्रैल 2025 की दोपहर तिब्बती लामा भिक्षु तुलकू हंगकर दोरजे की संदेहास्पद मौत की जानकारी मिलने पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने लखपा शेरिंग हॉल में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। इसमें अमन्ये माचेन इंस्टीट्यूट के निदेशक जू तेनक्योंग और धोमाय चोलखा एसोसिएशन के सांगशोल देसल को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुख्य वक्ता सीटीए के प्रवक्ता और अतिरिक्त सचिव तेनजिन लेक्षय थे। उन्होंने दोनों वक्ताओं का परिचय कराया और तत्काल अति आवश्यक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाने का कारण बताते हुए एक संक्षिप्त अपडेट नोट दिया। दोनों वक्ताओं और प्रवक्ता तेनजिन लेक्षय ने भिक्षु तुलकू हंगकर दोरजे की मौत में चीनी सरकार की भूमिका की कड़ी निंदा की और इस मौत की जवाबदेही तय करने और मामले में हस्तक्षेप करने का आह्वान किया।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान वक्ताओं ने तुलकु हंगकर दोरजे की संदिग्ध मौत की स्वतंत्र और पारदर्शी जांच कराने, समुचित बौद्ध परंपरा के अनुसार उनके अंतिम संस्कार के अनुष्ठानों के लिए उनके पार्थिव शरीर को तत्काल लुंगनोन मठ में सौंपने तथा हिरासत में रखने के दौरान संदेहास्पद मौत के लिए वियतनामी और चीनी दोनों प्राधिकारों से उनके अधिकारियों की जवाबदेही तय करने की मांग की।

प्रेस विज्ञप्ति

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन शोक और सदमे के साथ वियतनाम में चीनी अधिकारियों की हिरासत में प्रमुख तिब्बती लामा भिक्षु तुलकु हंगकर दोरजे की अचानक और संदेहास्पद मौत की घोषणा करता है। हंगकर रिनपोछे तिब्बत में चीनी अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न किए जाने की आशंका के कारण सितंबर 2024 के अंत से वियतनाम में छिपकर रह रहे थे। 25 मार्च 2025 को उन्हें स्थानीय पुलिस और चीनी गुप्त एजेंटों के एक संयुक्त ऑपरेशन में वियतनाम के साइगॉन स्थित होटल के कमरे से गिरफ्तार किया गया था, जहां वे छुपकर रह रहे थे। बाद में उन्हें 28 मार्च को स्थानीय सार्वजनिक सुरक्षा कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया, जहां उसी दिन उनकी संदिग्ध रूप से मृत्यु हो गई। इससे सीमा पार सुरक्षा सहयोग, अंतरराष्ट्रीय दमन और मानवाधिकारों के उल्लंघन के बारे में गंभीर चिंताएँ पैदा हुईं हैं इनकी तत्काल और गहन जांच किए जाने की जरूरत है। साथ ही वियतनामी और चीनी दोनों देशों के संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय की जानी चाहिए।

01 अप्रैल को तिब्बत में लुंगनोन मठ के प्रशासनिक कार्यालय ने दिवंगत भिक्षु के रिश्तेदारों को भिक्षु तुलकु हंगकर का मृत्यु प्रमाण-पत्र देने के लिए बुलाया, लेकिन उन्होंने वहां रिश्तेदारों को दस्तावेज़ रखने या तस्वीरें लेने से मना कर दिया। हंगकर रिनपोछे इसी मठ में रहते थे। 05 अप्रैल को मठ के पांच भिक्षु चीनी सरकारी अधिकारियों और प्रतिनिधियों के साथ उनका पार्थिव शरीर लेने के लिए वियतनाम गए। उसी दिन वियतनाम में चीनी दूतावास में एक बैठक बुलाई गई, जिसमें चीनी अधिकारियों ने भाग लिया। जबकि मठ के पांच तिब्बती भिक्षुओं को बैठक में जाने की अनुमति नहीं दी गई। यह स्पष्ट नहीं है कि मठ के प्रतिनिधि भिक्षु के पार्थिव शरीर को देख पाए या उसे मठ में वापस ले गए। वर्तमान सूचना के अनुसार भिक्षु का पार्थिव शरीर कथित तौर पर हो ची मिन्ह सिटी के विनमेक सेंट्रल पार्क इंटरनेशनल अस्पताल में रखा गया है।

1969 में तिब्बत के आमदो प्रांत में जन्मे तुलकु हंगकर दोरजे विख्यात तिब्बती आध्यात्मिक लामा थे। उनका जीवन शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से तिब्बती पहचान को संरक्षित करने के लिए अटूट समर्पण का प्रतीक था उन्हें पहले दिवंगत हुए दो ख्येनसे येशे दोरजे के नए अवतार के रूप में पहचाना गया था। रिनपोछे ने 1,000 से अधिक छात्रों को शिक्षा प्रदान करने वाले ट्यूशन फी-मुक्त हंगकर दोरजे वोकेशनल टेक्निकल हाईस्कूल की स्थापना की। उन्होंने वंचित समुदायों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए हंगकर कम्पैशन मेडिकल क्लिनिक की स्थापना की और साहित्यिक खजाने की सुरक्षा के लिए उत्कृष्ट प्रवचन कुंजी पुस्तकालय बनाया। उनके परोपकारी कार्यों में हज़ारों बुज़ुर्गों, ग़रीबों और बीमार तिब्बतियों को वित्तीय सहायता, भोजन, कपड़े और दवाएं प्रदान करना शामिल था। उन्होंने एक शिक्षक के तौर पर कई देशों में अपने शिक्षण कार्यक्रमों के दौरान तिब्बती भाषा, बौद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को संरक्षित करने की महत्ता पर लगातार ज़ोर दिया। भिक्षु हंगकर 20 से अधिक पुस्तकों के लेखक के रूप में भी विख्यात थे। पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक कल्याण और नैतिक शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान ने तिब्बती आध्यात्मिक परंपराओं को संरक्षित करने में अहम भूमिका निभाई। साथ ही, उन्होंने आधुनिक विश्व में तिब्बती पहचान को बचाने के लिए आवश्यक सम्पूर्ण सांस्कृतिक पारिस्थितिकीय तंत्र को संरक्षित करने में अपने समग्र दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया। अपने इन्हीं प्रयासों के कारण ही दुर्भाग्यवश उन्हें 12 दिन पूर्व अपनी विवादास्पद मृत्यु से पहले राजनीतिक उत्पीड़न का लक्ष्य भी बनना पड़ा था।

पिछले साल चीनी सरकार ने हंगकर रिनपोछे को उनके मठ में चीन द्वारा नियुक्त पंचेन लामा ग्यालत्सेन नोरबू की मेजबानी करने के लिए मजबूर किया। हालांकि इस आदेश का उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी की इच्छा के अनुसार पूरे दिल से पालन नहीं किया। अगस्त 2024 में किंगहाई प्रांत के उच्च पदस्थ चीनी अधिकारियों ने उनसे लंबी और गहन पूछताछ की और उन्हें उंगलियों के निशान देने के लिए मजबूर किया। उन पर यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने परम पावन दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना की रचना की थी और गोलोग, अमदो में अपने शैक्षिक कार्य में चीनी सरकार की नीतियों को लागू करने में विफल रहे थे। इन घटनाओं ने सितंबर 2024 के अंत में उनके लापता होने के बाद वियतनाम में छिपने को मजबूर किया था।

यहां पर यह उल्लेखनीय है कि भिक्षु तुलकु हंगकर दोरजे की संदेहास्पद मौत तिब्बती संस्कृति, भाषा और पहचान को बढ़ावा देने वाले प्रभावशाली तिब्बती हस्तियों को चीन द्वारा व्यवस्थित रूप से निशाना बनाने की नीति को उजागर करती है। यह एक

परेशान करने वाली प्रवृत्ति है। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन अंतरराष्ट्रीय समुदाय से तुलकु हंगकर रिनपोछे की अचानक और रहस्यमयी मौत की निंदा करने और उनकी हिरासत और मौत की परिस्थितियों के बारे में चीन और वियतनाम के अधिकारियों से पारदर्शी तरीके जांच कराने की मांग करता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुलकु हंगकर दोरजे के शव को संबंधित अधिकारियों द्वारा तुरंत लुंगनोन मठ को सौंप दिया जाना चाहिए, ताकि तिब्बती परंपरा के अनुसार उचित अंतिम संस्कार किया जा सके। यह मामला तिब्बती लोगों के मौलिक अधिकार और स्वतंत्रता के लिए जवाबदेही और सम्मान की आवश्यकता को और अधिक रेखांकित करता है। हम रिनपोछे के परिवार, दोस्तों और शिष्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं और उनके साथ एकजुटता में खड़े हैं।

हम हैं

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन
धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत

◆ 10.प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप ने जीफेंग बुकस्टोर में वॉयस फॉर द वॉयसलेस पर भाषण दिया

३० अप्रैल, २०२५

वाशिंगटन डीसी: वाशिंगटन डीसी में जीफेंग बुकस्टोर 24 अप्रैल 2025 को तिब्बत और परम पावन दलाई लामा की शिक्षाओं में रुचि रखने वालों के लिए एक सभा स्थल बन गया। प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप ने परम पावन के नवीनतम प्रकाशन, "वॉयस फॉर द वॉयसलेस" को संबोधित करने के लिए मंच संभाला, तो अंतरंग स्थल भर गया। बुकस्टोर के मालिक यू मियाओ ने प्रतिनिधि का गर्मजोशी से स्वागत किया और उनके सहयोगी ने पुस्तक चर्चा का संचालन किया।

प्रतिनिधि डॉ. चोएडुप ने भारत में जन्मे और पले-बढ़े एक तिब्बती की पृष्ठभूमि के रूप में अपनी व्यक्तिगत यात्रा को साझा करके संबोधन की शुरुआत की। उन्होंने बताया कि कैसे उनके माता-पिता, हजारों अन्य तिब्बतियों की तरह, 1959 में चीनी कब्जे के बाद तिब्बत से भाग गए और पड़ोसी भारत में शरण ली। उन्होंने बताया कि परम पावन 14वें दलाई लामा के नेतृत्व में, वे तिब्बती इतिहास के सबसे काले दौर में तिब्बतियों की कई पीढ़ियों के लिए आशा और साहस की किरण बन गए। उन्होंने आगे परम पावन की चार प्रतिबद्धताओं के बारे में बताया।

प्रतिनिधि ने विस्तार से बताया कि कैसे दलाई लामा तिब्बतियों के लिए आशा और लचीलेपन की किरण रहे हैं, जिसे उन्होंने "तिब्बत के इतिहास का सबसे काला अध्याय" बताया। विस्थापन और सांस्कृतिक विनाश की अपार चुनौतियों के बावजूद, परम पावन ने तिब्बतियों की पीढ़ियों को आधुनिक शिक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने के लिए लगातार प्रेरित किया।

प्रतिनिधि ने परम पावन के आजीवन मिशन की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं पर विस्तार से चर्चा की: मानवीय मूल्यों जैसे करुणा, क्षमा, सहिष्णुता और संतोष को मानवीय सुख की नींव के रूप में बढ़ावा देना; संवाद और आपसी सम्मान के माध्यम से अंतर-धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देना; तिब्बत की अनूठी संस्कृति, भाषा और पर्यावरण का संरक्षण; और प्राचीन भारतीय ज्ञान के मूल्य में अधिक जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देना,

विशेष रूप से मन विज्ञान और भावनात्मक कल्याण के क्षेत्रों में।

इस कार्यक्रम में कई चीनी उपस्थित लोगों सहित विविध श्रोताओं ने भाग लिया, जिन्होंने ध्यान से सुना। प्रश्न-उत्तर सत्र में कई विषयों पर चर्चा की गई, जिसमें चीन-तिब्बती संबंधों के भविष्य से लेकर परम पावन दलाई लामा के तिब्बत लौटने की संभावना तक शामिल थी। एक चीनी श्रोता ने आधुनिकीकरण के दौर में सांस्कृतिक संरक्षण के बारे में पूछा, जबकि दूसरे ने परम पावन दलाई लामा के उत्तराधिकार के बारे में पूछा।

प्रतिनिधि डॉ. चोएडप ने प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते हुए इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती आंदोलन चीनी विरोधी नहीं है, बल्कि यह दोनों देशों के लिए न्याय और पारस्परिक लाभ के लिए एक शांतिपूर्ण आह्वान है। उन्होंने इस मुद्दे को हल करने के लिए परस्पर लाभकारी मार्ग के रूप में संवाद और मध्यमार्ग दृष्टिकोण के लिए परम पावन की अनुशंसित निरंतर वकालत को रेखांकित किया।

शाम का समापन प्रतिनिधि डॉ. चोएडप के साथ संक्षिप्त बातचीत के अवसर के साथ हुआ। कई लोग न केवल "वॉयस फॉर द वॉयसलेस" की एक प्रति लेकर गए, बल्कि तिब्बत के स्थायी संघर्ष और परम पावन दलाई लामा के दयालु, अहिंसक दृष्टिकोण की गहरी समझ भी प्राप्त की।

◆ 11.तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे रिनपोछे की संदिग्ध मौत पर निर्वासित तिब्बती संसद का बयान

१८ अप्रैल, २०२५

निर्वासित तिब्बती संसद ने तिब्बत के गोलोग के गाडे काउंटी में लुंग-न्गोन मठ के ५६ वर्षीय प्रमुख तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे रिनपोछे के असामयिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। रिनपोछे की मार्च २०२५ के अंत में वियतनाम में चीनी हिरासत में संदिग्ध स्थिति में मृत्यु हो गई थी।

तिब्बत में चीनी अधिकारियों द्वारा अगस्त २०२४ में कथित तौर पर तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे रिनपोछे से पूछताछ की गई और उन पर राजनीतिक रूप से प्रेरित आरोप लगाए गए। इनमें चीनी सरकार के निर्देश के अनुसार उसके द्वारा नियुक्त पंचेन लामा ग्यालत्सेन नोरबू के स्वागत में समारोह आयोजित करने में कथित विफलता के साथ-साथ परम पावन १४वें दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना लिखने और उनके मार्गदर्शन में स्थापित स्कूलों मेंचीनी सरकारी शिक्षा और नीतियों को लागू न करने से संबंधित आरोप शामिल थे।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्ट्स से पता चलता है कि उन्हें २५ मार्च २०२५ को वियतनाम के हो ची मिन्ह शहर से गिरफ़्तार किया गया था। उसके बाद ०३ अप्रैल २०२५ को लुंग-न्गोन मठ द्वारा उनकी मृत्यु की घोषणा की गई।

चीन सरकार द्वारा उनके शव को लौटाने या श्रद्धांजलि देने के लिए उचित यात्राओं की अनुमति देने से इनकार करने के अलावा, हम उनकी मृत्यु के समय की परिस्थितियों के बारे में गहराई से चिंतित हैं, जो अत्यधिक संदिग्ध प्रतीत होती हैं।

तुलकु रिग्ज़िन हंगकर दोरजे रिनपोछे एक अत्यधिक सम्मानित और पूजनीय आध्यात्मिक नेता थे, जिनके अनुयायी दुनिया भर में थे। उन्हें करुणा, शांति और अहिंसा के सिद्धांतों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिए व्यापक रूप से पहचाना जाता था।

निर्वासित तिब्बती संसद अंतरराष्ट्रीय समुदाय से वियतनाम सरकार और संबंधित अधिकारियों से निम्नलिखित मांग करने का आह्वान और आग्रह करती है:-

तुलकु रिग्ज़िन हंगकर दोरजे रिनपोछे की हिरासत और मृत्यु के समय की परिस्थितियों की गहन और स्वतंत्र जांच करें और जांच के निष्कर्षों का सच्चाई से खुलासा करें।

तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे रिनपोछे के पार्थिव शरीर को तत्काल उनके मठ में वापस लाना सुनिश्चित करें और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार मृत्यु के कारण का पता लगाने के लिए फोरेंसिक विशेषज्ञों द्वारा उचित जांच की अनुमति दें।

तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुसार अंतिम संस्कार का उचित प्रबंध सुनिश्चित करने के लिए जांच पूरी होने पर तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे रिनपोछे के पार्थिव शरीर को उनके परिवार और मठ में तुरंत वापस लाने की व्यवस्था करें।

◆ 12.ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत ने नई दिल्ली स्थित संविधान सदन में बैठक बुलाई

०३ अप्रैल, २०२५

नई दिल्ली। ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत (तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच) ने तिब्बत के लिए संसदीय स्तर पर पक्षधरता अभियान चलाने पर चर्चा करने और उसे मजबूत करने के लिए नई दिल्ली के संविधान सदन में एक बैठक बुलाई। बैठक की अध्यक्षता एपीआईपीएफटी के संयोजक और लोकसभा सदस्य श्री भर्तृहरि महताब ने की और सह-अध्यक्षता एपीआईपीएफटी के सह-संयोजक और लोकसभा सदस्य श्री तापिर गाओ ने की।

एपीआईपीएफटी के पूर्व संयोजक श्री सुजीत कुमार, जम्मू-कश्मीर से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री गुलाम अली, नगालैंड से भाजपा की लोकसभा सांसद श्रीमती एस. फागनन कोन्याक, पश्चिम बंगाल से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री डॉ. जयंत कुमार रॉय, असम से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री कामाख्या प्रसाद तासा, सिक्किम से एसकेएम के लोकसभा सांसद श्री इंद्र हंग सुब्बा, नगालैंड से कांगेस के लोकसभा सांसद श्री सुपोंगमेरेन एस. जमीर, ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री डॉ. प्रदीप कुमार पाणिग्रही, मिजोरम से जेडपीएम के लोकसभा सांसद श्री रिचर्ड वनलालहमंगइहा, तेलंगाना से कांग्रेस की लोकसभा सांसद श्रीमती डॉ. कदियम काव्या और मणिपुर से कांग्रेस के लोकसभा सांसद श्री अल्फ्रेड के. आर्थर शामिल हुए।

बैठक में राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत मुद्दे के बारे में निरंतर जागरुकता सुनिश्चित करने और संसदीय भागीदारी को मजबूत करने को लेकर चर्चा की गई। चर्चा का प्रमुख मुद्दा तिब्बत के मुद्दे को प्रासंगिक बनाए रखने और तिब्बती मुक्ति साधना के लिए कूटनीतिक और राजनीतिक समर्थन बढ़ाने के लिए आवश्यक रणनीतिक पहलों को शुरू करना था।

बैठक में ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री भर्तृहरि महताब, अरुणाचल प्रदेश से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री तापिर गाओ, ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सांसद और

बैठक में पिछले सत्र की चर्चाओं पर संक्षिप्त जानकारी दी गई, ताकि २५ अप्रैल को उपस्थित न होने वाले विशिष्ट सांसदों को जानकारी दी जा सके। जिन सांसदों को जानकारी दी गई, उनमें ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सांसद और एपीआईपीएफटी के पूर्व संयोजक श्री सुजीत कुमार, जम्मू-कश्मीर से भाजपा के राज्यसभा सांसद श्री गुलाम अली खटाना, नगालैंड से भाजपा की लोकसभा सांसद श्रीमती एस. फागनन कोन्याक, ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सांसद डॉ. प्रदीप कुमार पाणिग्रही और पश्चिम बंगाल से भाजपा के लोकसभा सांसद श्री डॉ. जयंत

कुमार रॉय शामिल हैं।

नई दिल्ली स्थित परम पावन दलाई लामा ब्यूरो के प्रतिनिधि जिग्मे जुंगने ने भारत-तिब्बत समन्वय स्टाफ और आईटीसीओ, नई दिल्ली की समन्वयक ताशी देकि, संसदीय समन्वयक फुंटसोक ग्यात्सो, लेखाकार मिग्मर सामछो और कार्यक्रम अधिकारी ङवांग चोडेन के साथ मिलकर सभी सम्मानित संसद सदस्यों को स्मृति चिन्ह के रूप में परम पावन १४वें दलाई लामा की पुस्तक 'वॉयस फॉर द वॉइसलेस: ओवर सेवन डिकेड्स ऑफ स्ट्रगल विद चाइना फॉर माई लैंड, माई पीपल' भेंट की।

यह बैठक तिब्बती मुद्दे को लेकर भारत की निरंतर एकजुटता और तिब्बत में न्याय और मानवाधिकारों के प्रति भारतीय सांसदों की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

◆ 13.ब्रिटिश प्रतिनिधि शेरिंग यांगकी ने मिल्टन कीन्स में १२वें वार्षिक तिब्बती ध्वजारोहण समारोह में भाग लिया

२८ अप्रैल, २०२५

मिल्टन कीन्स। मिल्टन कीन्स स्थित निप्पोनज़न म्योहोजी बौद्ध मंदिर में २७ अप्रैल २०२५ की दोपहर को लगातार १२वें वर्ष तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया, जो तिब्बती लोगों के साथ एकजुटता के प्रतीक के रूप में लहरा था।

समारोह की शुरुआत मंदिर के अंदर शांत गायन कटोरे के ध्यान और प्रार्थना सत्र के साथ हुई, जिसका नेतृत्व कुंचोक न्यिमा ने किया। उन्होंने अलग-अलग आकार के गायन कटोरे पर कुशल प्रदर्शन किया, जिसे लगभग ५० स्थानीय निवासियों और तिब्बत समर्थकों ने विस्मित नजरों से देखा और श्रद्धावनत हो गए।

जापानी बौद्ध मंदिर की सिस्टर मारुता द्वारा तिब्बती ध्वज को आशीर्वाद देने के बाद मिल्टन कीन्स की मेयर काउंसलर मैरी ब्रैडबर्न ब्रिटेन में परम पावन दलाई लामा की प्रतिनिधि शेरिंग यांगकी के साथ राजसी मंदिर के पीछे तिब्बती ध्वज फहराने में शामिल हुईं। ध्वजारोहण के साथ ही तिब्बती राष्ट्रगान गूंज उठा, जिसे वहां मौजूद तिब्बतियों ने जोश के साथ गाया।

मिल्टन कीन्स की अपनी पहली यात्रा में प्रतिनिधि शेरिंग यांगकी ने तिब्बत पर ब्रिटेन के स्थायी समर्थन के लिए मिल्टन कीन्स की मेयर और उपस्थित लोगों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने तिब्बत के अंदर बिगड़ती स्थिति के बारे में खुलकर बात की। चीन के तीव्र अंतरराष्ट्रीय दमन पर प्रकाश डाला। उदाहरण के तौर पर उन्होंने वियतनाम में तुलकु हुंगकर दोरजे की संदिग्ध मौत और तिब्बती पहचान पर औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों के हानिकारक प्रभाव को उद्धृत किया।

मेयर मैरी ब्रैडबर्न ने इन औपनिवेशिक संस्थानों में तिब्बती बच्चों की दुर्दशा के बारे में जानने पर अपना दुख दिल से व्यक्त किया। उन्होंने पुष्टि की कि इस कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति हर जगह, विशेष रूप से तिब्बत में स्वतंत्रता-प्रेमी लोगों के साथ एकजुटता का एक मजबूत संदेश है।

मिल्टन कीन्स में ध्वज-उद्घाटन परंपरा शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली कैथरीन मोस्टिन स्कॉट ने हिमालय पार कर निर्वासन में आने वाले तिब्बती शरणार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों को याद करते हुए भावनात्मक भाषण दिया।

कार्यक्रम में मार्मिक भावुकता उस समय और व्याप्त हो गई, जब स्थानीय स्वयंसेवक और इस कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक इंडिगो सिंक ने कुछ दिन पहले ही लिखी एक प्रभावशाली कविता सुनाई। इस कविता ने दर्शकों में से कई लोगों के बीच गहरी भावनाएं जगाईं। इन समारोहों में नियमित रूप से शामिल होनेवाले गायक ली बेलिंगहैम ने स्वतंत्रता को समर्पित एक गीत के अपने भावपूर्ण प्रदर्शन से लोगों को और भावुक और उत्साहित कर दिया।

ब्रिटेन में तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष फुंटसोक नोरबू ने आगंतुकों को उनके निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने २५ अप्रैल २०२५ को तिब्बत के पंचेन लामा के ३६वें जन्मदिन के अवसर पर ताशी ल्हुंपो मठ द्वारा जारी बयान के कुछ अंश भी पढ़े। पिछले वर्षों की तरह समारोह का समापन लोकप्रिय तिब्बत ध्वज दौड़ के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने स्थानीय क्षेत्र में गर्व के साथ तिब्बती झंडे उठाए। इस कार्यक्रम ने एक बार फिर तिब्बती मुद्दे के प्रति समुदाय की अटूट प्रतिबद्धता और एक स्वतंत्र तिब्बत की आशा की पुष्टि की।

◆ 14.केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने पहलगाम पीड़ितों से एकजुटता दर्शाते हुए प्रार्थना समारोह आयोजित किया

२५ अप्रैल, २०२५

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने आज २५ अप्रैल की दोपहर ३:०० बजे सिक्योंग हॉल में एक विशेष प्रार्थना सेवा आयोजित की। यह प्रार्थना- सेवा जम्मू- कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए दुखद आतंकी हमले के पीड़ितों को सम्मानित करने और उनके परिवारों के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए आयोजित की गई थी। पहलगाम हमले में २६ लोगों की जान चली गई और १७ लोग घायल हो गए।

प्रार्थना समारोह में कैबिनेट सचिव सेग्याल चुक्या द्रानी ने दुखद घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया, पीड़ितों और उनके परिवारों के लिए हार्दिक प्रार्थना की। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती समुदाय की ओर से उन्होंने दर्दनाक खबर पर गहरा दुख व्यक्त किया और सभी से पीड़ितों के लिए एकजुटता से खड़े होने और प्रार्थना करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, 'इस कठिन समय में हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं भारत के लोगों और सरकार के साथ हैं।

न्याय आयुक्त दावा फुनकी और लाबरंग फग्पा शेरिंग, चुनाव आयुक्त लोबसांग येशी, लोक सेवा आयुक्त कर्मा येशी, १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद की स्थायी समिति के सदस्य, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सचिव और सिविल सेवक इस प्रार्थना-सेवा में शामिल हुए।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने भी एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर शोक और एकजुटता का संदेश व्यक्त किया, जिसमें इस कठिन समय में तिब्बती समुदाय का समर्थन व्यक्त किया गया है।

◆ 15.यूरोपीय संसद ने ११वें पंचेन लामा की रिहाई का आह्वान किया

२५ अप्रैल, २०२५

ब्रुसेल्स। यूरोपीय संसद के सदस्यों ने तिब्बत के दूसरे सर्वोच्च धर्मगुरु ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा के ३६वें जन्मदिन के अवसर पर उनकी रिहाई की मांग की है और उनके प्रति अपना अटूट समर्थन दोहराया है। सदस्यों ने मांग की है कि चीनी सरकार तुरंत उनके ठिकाने का खुलासा करे।

इस दुखद वर्षगांठ को मनाने के दौरान कई यूरोपीय संसद सदस्यों ने सार्वजनिक रूप से एकजुटता प्रदर्शित करते हुए तख्तियां पकड़ीं, जिन पर लिखा था, '११वें पंचेन लामा २५ अप्रैल २०२५ को ३६ वर्ष के हो जाएंगे। लेकिन वे कहां हैं? चीन उनको लेकर दुनिया के प्रति जवाबदेह है।' यह संदेश बहुत प्रभावशाली और मार्मिक है, जो पारदर्शिता और न्याय की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय मांग को प्रतिध्वनित करता है। इसके अतिरिक्त यूरोपीयन पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत ने पंचेन लामा मामले में नियुक्त उच्च प्रतिनिधि के समक्ष एक लिखित प्रश्न रखा है।

जन्मदिन आमतौर पर प्रियजनों के साथ खुशी और उत्सव का समय होता है, लेकिन ११वें पंचेन लामा को इस मौलिक अधिकार से वंचित किया गया है। परम पावन दलाई लामा द्वारा १९९५ में मान्यता दिए जाने के तीन दिन बाद ही उनका छह साल की उम्र में चीनी अधिकारियों द्वारा अपहरण कर लिया गया। इसके बाद से उन्हें नहीं देखा गया है। उनको जबरन गायब किया जाना आधुनिक समय में धार्मिक और सांस्कृतिक दमन के सबसे परेशान करने वाले मामलों में से एक है।

पंचेन लामा का मामला चीन द्वारा तिब्बती पहचान, धर्म और संस्कृति के चल रहे दमन की कठोर मिशाल है। संयुक्त राष्ट्र का सदस्य होने और बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (१९८९) सहित प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संधियों का हस्ताक्षरकर्ता होने के बावजूद, चीन अपने दायित्वों को निभाने में विफल रहा है। कन्वेंशन हर बच्चे को नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों के उपभोग करने के अधिकार की गारंटी देता है। ये अधिकार पंचेन लामा से छीन लिए गए थे और तिब्बत के अंदर अनगिनत तिब्बती बच्चों को इनसे वंचित रखा जा रहा है।

प्राचीन तिब्बती बौद्ध परंपराओं के अनुसार चुने गए ११वें पंचेन लामा एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक व्यक्ति हैं और उनका गायब होना धार्मिक स्वतंत्रता, मानवाधिकारों और विचार, विवेक और विश्वास की स्वतंत्रता के सिद्धांतों का गंभीर उल्लंघन है।

यूरोपीय संसद के सदस्य चीनी सरकार से दशकों से चली आ रही इस चुप्पी को खत्म करने का आग्रह करने के लिए उठाई जा रही अंतरराष्ट्रीय आवाज़ों में शामिल हैं। अब समय आ गया है कि चीन सच्चाई को उजागर करे और दुनिया को तिब्बत के चोरी हुए बच्चे की नियति के बारे में बताए।

◆ 16.एनसीएससी ने उग्यूर, तिब्बती और ताइवानी समूहों को निशाना बनाने वाले स्पाइवेयर के तकनीकी विवरण का खुलासा किया

- रिकॉर्ड, ०९ अप्रैल, २०२५

इंग्लैंड के राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा केंद्र (एनसीएससी) और अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा खुफिया एजेंसियों ने बुधवार को कहा कि हैकर्स उग्यूर, तिब्बती और ताइवानी लोगों और नागरिक समाज संगठनों की जासूसी करने के लिए पहले से पहचाने गए स्पाइवेयर के दो संस्करणों को तैनात कर रहे हैं।

MOONSHINE और BADBAZAAR के नाम से पहचाने जाने वाले दो निगरानी सॉफ्टवेयर डिवाइस के माइक्रोफोन और कैमरों में सेंध लगाता है और संदेश, फ़ोटो और लोकेशन के डेटा एकत्र करता है। इससे उपयोगकर्ताओं की जानकारी के बिना ही उनकी हर गतिविधि की हर तरह से निगरानी की जा सकती है।

ब्रिटिश सरकार की खुफिया एजेंसी जीसीएचक्यू का एक उपक्रम एनसीएससी के साथ ही अनेक देशों की सरकारों और औद्योगिक समूहों ने निगरानी सॉफ्टवेयर के तकनीकी आधार का खुलासा किया है और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों और ऐप स्टोर ऑपरेटरों और डेवलपर्स को मार्गदर्शन और तकनीकी विश्लेषण प्रदान करने की पेशकश की है।

एनसीएससी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि स्पाइवेयर से संक्रमित ऐप्स का इस्तेमाल दुनिया भर में उन व्यक्तियों और संगठनों की जासूसी करने के लिए किया जा रहा है, जो 'चीनी सरकार के अनुसार, उसकी स्थिरता के लिए खतरा पैदा करने वाली' गतिविधियों में शामिल हैं।

जिन डिवाइस धारको पर उनकी जासूसी का सबसे अधिक खतरा मंडराता माना जाता है, उनमें ताइवान के स्वतंत्रता आंदोलन, तिब्बती अधिकार संगठनों और उग्यूर मुसलमान शामिल हैं। चीन के झिंझियांग-उग्यूर स्वायत्त क्षेत्र में या वहां के नस्लीय अल्पसंख्यक, लोकतंत्र समर्थक और फालुन गोंग धर्म के सदस्यों पर भी उनकी जासूसी किए जाने का जोखिम होने का अनुमान है।

कुछ ऐप व्हाट्सऐप और स्काइप जैसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म की नकल करते हैं, जबकि अन्य को जासूसी किए जाने वाले समुदायों में संभावित पीड़ितों से रुचि आकर्षित करने के लिए स्टैंडअलोन प्लेटफॉर्म के रूप में स्थापित किया गया है। तिब्बत वन और ऑडियो कुरान ऐसे ही दो स्टैंडअलोन ऐप्स है जो यूजर्स की अपनी भाषाओं में उपलब्ध हैं।

एनसीएसी ने उदाहरण देते हुए बताया है कि हैकर्स ने इस क्षेत्र में सक्रिय टेलीग्राम चैनलों और संबंधित रेडिट फ़ोरम में तिब्बत वन ऐप को इंस्टॉल (स्थापित) कर दिया है।

तिब्बत वन एक आईओएस ऐप है, जिसे दिसंबर २०२१ में ऐप्पल ऐप स्टोर पर अपलोड किया गया था, लेकिन उसके बाद इसे हटा दिया गया है। एनसीएसीसी ने कहा कि दुष्ट शक्तियों ने ऐप को BADBAZAAR स्पाइवेयर रखनेवाले उपयोगकर्ताओं के उपकरणों को संक्रमित करने के सुचालक के तौर पर बनाया था।

एनसीएससी ने कहा कि ऑडियो कुरान ऐप उग्यूरों पर नजर रखने के लिए MOONSHINE स्पाइवेयर का उपयोग करता है। इसमें उग्यूरों का विश्वास पैदा करने के लिए ऐप में उग्यूरों की ही भाषा में फ़ाइल नाम रखने की सुविधा दी गई है। इसके साथ ही यह ऐप खुद को इस्लाम के पवित्र ग्रंथ- कुरान से संबंधित सामग्री रखने वाले के तौर पर वर्णित करता है।

ताइवान पर कभी भी चीन का शासन नहीं रहा है। लेकिन बीजिंग ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह इस देश को अपनी मुख्य भूमि में विलय करना चाहता है और ऐसा करने के लिए सैन्य बल पर विचार कर रहा है।

उग्यूर चीन का मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी है। चीनी सरकार ने कथित तौर पर लगभग एक दशक से पुनर्शिक्षा शिविरों में दस

लाख से अधिक उग्यूरों को रख रखा है।

तिब्बत के कुछ हिस्से चीन के भीतर स्वायत्त क्षेत्र के रूप में हैं, जिसकी सरकार ने वहां तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन पर नकेल कस रखी है।

एनसीएससी के संचालन निदेशक पॉल चिचेस्टर ने एक बयान में कहा, 'हम सीमाओं के पार समुदायों को चुप कराने, निगरानी करने और डराने के लिए डिज़ाइन किए गए डिजिटल खतरों में वृद्धि देख रहे हैं।'

एनसीएससी ने खतरे की आशंका वाली आबादी को चेतावनी दी है कि वे केवल ज्ञात ऐप स्टोर का उपयोग करें, इंस्टॉल होने के बाद ऐप की जांच करें और अनुमतियों की नियमित समीक्षा करें, संदिग्ध संदेशों और फ़ाइलों की रिपोर्ट करें और सोशल मीडिया पर साझा की गई फ़ाइलों और लिंक का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करें।

◆ 17.तिब्बत समर्थक समूहः शीर्ष तिब्बती लामा की मृत्यु की परिस्थितियों की पारदर्शी जांच होना जरूरी

२५ अप्रैल, २०२५

रिइगीकोगु (एस्टोनिया की संसद) के तिब्बत समर्थक समूह ने शीर्ष तिब्बती लामा की गिरफ्तारी और मृत्यु पर चिंता व्यक्त की।

प्रेस विज्ञप्ति

समर्थन समूह ने एक संयुक्त बयान में कहा है, 'हम शीर्ष तिब्बती लामा तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे की वियतनामी पुलिस और चीनी एजेंटों के संयुक्त अभियान के दौरान २५ मार्च २०२५ को हो ची मिन्ह सिटी (साइगॉन) के एक होटल में गिरफ्तारी और उसके बाद ०३ अप्रैल २०२५ को उनके मठ लुंग न्गोन द्वारा उनकी मृत्यु की सूचना की रिपोर्टों से बहुत चिंतित हैं'।

समर्थन समूह उन रिपोर्टों की ओर इशारा करता है जो बताती हैं कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट, गेड काउंटी सरकार के धार्मिक मामलों के ब्यूरो, गोलोक प्रिफेक्चर की सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो और किंघाई प्रांत के खुफिया विभाग के अधिकारियों का समूह गत ०५ अप्रैल की सुबह वियतनाम पहुंचा।

रिइगीकोगु के तिब्बत समर्थक समूह को प्राप्त सूचना के अनुसार, अगस्त २०२४ में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के अधिकारियों ने शीर्ष तिब्बती लामा तुलकु रिग्जिन हंगकर दोरजे से पूछताछ की। माना जा रहा है कि यह पूछताछ चीनी सरकार द्वारा नियुक्त (अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमान्य) पंचेन लामा का हंगकर दोरजे द्वारा पर्याप्त गर्मजोशी से स्वागत करने में विफल रहने और राज्य प्राधिकरण से स्वतंत्र स्थानीय स्कूलों के माध्यम से तिब्बती धर्म, संस्कृति और भाषा को संरक्षित करने की उनकी प्रतिबद्धता और कार्य के संबंध में की गई।

समर्थक समूह की चिंताएं शीर्ष लामा की मौत के समय की परिस्थितियों के बारे में परस्पर विरोधी विवरणों से बढ़ गई हैं। इन विवरणों में यह तथ्य भी शामिल है कि वियतनामी अधिकारियों के अनुसार तुलकु रिग्ज़िन हंगकर दोरजे की मृत्यु का प्रारंभिक कारण दिल का दौरा था। लेकिन चीनी अधिकारियों ने तिब्बत के लुंग न्गोन मठ को तुलकु रिग्ज़िन हंगकर दोरजे का मृत्यु प्रमाण-पत्र संक्षेप में दिखाया, लेकिन मठ को दस्तावेजों को रखने या उनकी प्रतियां बनाने की अनुमति नहीं दी।

समर्थक समूह ने अपने बयान में रेखांकित किया है, 'हम हिरासत में मौत के मामलों की राज्य द्वारा जिम्मेदारी लेने दायित्व पर जोर देते हैं और इस बात पर भी जोर देते हैं कि गहन और निष्पक्ष जांच करने में विफलता जीवन के अधिकार का उल्लंघन माना जाना चाहिए। जीवन का अधिकार मौलिक मानव अधिकारों में से एक है और सभी सार्वभौमिक अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार निकायों में इसकी गारंटी दी गई है।

'हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय से वियतनामी सरकार से अपने अंतरराष्ट्रीय कानूनी दायित्वों के निर्वहन और इस बेहद चिंताजनक मामले की विश्वसनीय और पारदर्शी जांच सुनिश्चित करने का आग्रह करते हैं।'

रिइगिकोगु तिब्बत समर्थक समूह की बैठक की अध्यक्षता जुकु-काले रेड द्वारा की गई। इस समूह के सदस्य हैं- एनली एकरमैन, एंटी अल्लास, एस्टर करुसे, एंडो किविबर्ग, एरिक-नाइल्स क्रॉस, लियो कुन्नस, हाना लाहे, टोनिस लुकास, एवलिन पूलमेट्स, एंटी पूलमेट्स, हेन पोलुआस, मारेक रेनास, उर्मास रेनसालू, रीना सिक्कट, कालेव स्टोइसस्कु, टार्मो टैम, टूमास उइबो, क्रिस्टो एन वागा और जाक वाल्गे।

◆ 18.तिब्बत में दूरसंचार के लिए प्रताड़ना

१५ अप्रैल, २०२५

क्या आपने कभी किसी दूसरे देश में किसी को फ़ोन या ईमेल किया है? किसी मित्र, रिश्तेदार या शायद किसी सहकर्मी को?

यह पूरी तरह से एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न लगता है। आज की अत्यधिक जुड़ी दुनिया में, जहां संचार अविश्वसनीय रूप से सस्ता और आसानी से उपलब्ध है, ये ऐसी चीज़ें हैं जो लोग बिना सोचे-समझे दिन में अनगिनत बार करते हैं।

हालांकि, अगर आप तिब्बती हैं तो आपको इसके बारे में बहुत सावधानी से सोचना होगा। वर्षों से चीन सरकार ने तिब्बती क्षेत्रों में लोगों को राजनीतिक रूप से प्रेरित फ़ोन और इंटरनेट से संबंधित अपराधों के लिए गिरफ़्तार किया है।

चीन के बाहर के लोगों, यहां तक कि रिश्तेदारों से भी संपर्क करना, सिर्फ़ एक ऐसी गतिविधि है जो आपको अधिकारियों द्वारा उत्पन्न परेशानी में डाल सकती है। दूसरा है आपके फ़ोन पर ऐसी तस्वीरें या टेक्स्ट होना जो सरकार को पसंद नहीं है। इसे तथाकथित तौर पर प्रतिबंधित सामग्री माना जाता है। तीसरा है ऐसी सामग्री सार्वजनिक करना जो अधिकारियों को नापसंद हो। चाहे यह सिर्फ़ एक मज़ेदार वीडियो ही क्यों न हो।

ऐसी चीज़ें- जो दुनिया के ज़्यादातर हिस्सों में मामूली बातें हैं- चीनी शासन के तहत तिब्बत में गिरफ़्तारी, हिरासत और यातना का कारण बन सकती हैं।

तिब्बतियों को हर बार अपने फोन को छूने से पहले इन खतरों को ध्यान में रखना पड़ता है। क्योंकि वहां मोबाइल फोन अनिवार्य रूप से सरकार द्वारा निगरानी में रखा जानेवाला डिवाइस है।

दुनिया भर में लोग मोबाइल फोन के बारे में यही कहते हैं और आम तौर पर इसमें कुछ सच्चाई भी है। लेकिन तिब्बत में आपके सेल फोन के ज़रिए निगरानी उन्नत स्तर की है।

अधिकारी सामूहिक तौर पर फ़ोन की तलाशी लेते हैं और सभी को अनिवार्य रूप से सरकार द्वारा निगरानी किया जानेवाला फ़ोन ऐप इंस्टॉल करने होते हैं।

तिब्बत में दूरसंचार-संबंधित कथित 'अपराधों' के लिए गिरफ़्तारियों और मुकदमों का पूरा पैमाना अज्ञात है। चीनी अधिकारी राजनीतिक अपराधों के लिए आधिकारिक डेटा का खुलासा नहीं करते हैं। एक नई एचआरडब्ल्यू रिपोर्ट में ६० से ज़्यादा मामले पाए गए, लेकिन यह निश्चित रूप से सिर्फ़ हिमशैल का एक सिरा है।

कुछ मामलों से, ख़ास तौर पर 'प्रतिबंधित सामग्री' की व्यापक परिभाषा के इर्द-गिर्द आपको यह अंदाज़ा हो जाता है कि स्थिति कितनी क्रूर है।

कई ऐसे मामले भी आए, जिनमें 'प्रतिबंधित सामग्री' के लिए गिरफ़्तार किए गए लोगों के पास निर्वासित आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा जैसे तिब्बती धार्मिक हस्तियों के संदर्भों के अलावा कुछ भी नहीं था या उन्होंने कुछ साझा नहीं किया था।

एक मामले में एक व्यक्ति को ८० वर्षीय बौद्ध भिक्षुओं के जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए एक वीचैट समूह बनाने के लिए गिरफ्तार किया गया था। पुलिस ने कहा कि 'अनुमति के बिना' इस तरह का चैट समूह बनाना अवैध है।

चीनी अधिकारी तिब्बतियों के अधिकारों का मज़ाक उड़ा रहे हैं। वे तिब्बतियों को न तो स्वतंत्र रूप से अपनी बात कहने देते हैं और न ही उन तक जानकारी पहुंचने देते हैं। वे तिब्बतियों से उनके प्रियजनों के संपर्क में रहने के मूल अधिकार को भी छीन रहे हैं।

दुनिया के अधिकांश हिस्सों में वैश्विक संचार तेजी से फैल रहा है। दूसरों के संपर्क में रहना पहले कभी इतना आसान नहीं रहा।

चीन में चीजें विपरीत दिशा में जा रही हैं, क्योंकि सरकार तेजी से पूरी आबादी को बंद करने और नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है

◆ 19.चीन ने हालिया श्वेत पत्र में तिब्बत का नाम ही मिटा दिया

२२ अप्रैल, २०२५

'एक झूठ को हज़ार बार दोहराया जाए तो भी वह झूठ ही रहता है'- चीन के हालिया श्वेत पत्र में तिब्बत के इतिहास को मिटा दिया गया है, असहमति को दबा दिया गया है और दमन को 'मानवाधिकार' कहा गया है।

-जापान फॉरवर्ड में सावांग ग्याल्पो आर्य

चीन ने तिब्बत पर अपना नवीनतम श्वेत पत्र- 'नए युग में ज़िज़ांग में मानवाधिकार' २८ मार्च को जारी किया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) इस तिथि को 'दासता से मुक्ति दिवस' कहती है। असल में यह १९५९ में तिब्बत की वैध सरकार को सीसीपी द्वारा भंग करने की वर्षगांठ है।

७० वर्षों के नियंत्रण के बाद भी तिब्बत पर चीनी कब्जे की वैधता एक अनसुलझा अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बना हुआ है। यह स्थिति इस तथ्य से उजागर होती है कि यह तिब्बत पर चीन का १८वां श्वेत-पत्र है। यह किसी भी दूसरे देश द्वारा अपने दावे वाले क्षेत्रों के बारे में जारी किए गए श्वेत-पत्र से कहीं अधिक है श्वेत पत्र जारी करने से सिर्फ़ एक कमज़ोर शासन की छवि उभरती है जो दुष्प्रचार और गलत सूचना का सहारा लेता है।

श्वेत पत्र से साबित होता है कि सीसीपी अपने लोगों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय दोनों पर अपने सरासर झूठ को थोपने के लिए किस हद तक जा सकती है। यह चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को साम्राज्यवादी ताकतों और सामंती ताकतों से तिब्बत के मुक्तिदाता के रूप में गलत तरीके से चित्रित करता है बीजिंग ने अपने द्वारा किए गए नरसंहार को वैध बनाने के लिए मानवाधिकारों की अवधारणा पर हमला किया है और उसे विकृत किया है। उसने अपनी इस अवधारणा को तिब्बत और अन्य कब्जा किए क्षेत्रों में जारी रखा है। लेकिन वास्तविकता और ऐतिहासिक तथ्यों को विकृत कर और गलत सूचना फैलाने की हद तक नीचे गिरकर चीन महत्वाकांक्षी महाशक्ति नहीं बन सकता है।

भाषा के माध्यम से तिब्बत का खात्मा

पिछले श्वेत-पत्रों के विपरीत इस बार चीन ने 'तिब्बत' शब्द का उपयोग करने से जान-बूझकर बचने का प्रयास किया है। इसके बजाय उसने तिब्बत के लिए अपना खुद का किया नामकरण 'जिज़ांग' शब्द का उपयोग किया है। यह जान-बूझकर नीतिगत बदलाव को दर्शाता है। यू-सांग, अमदो और खाम प्रांतों से मिलकर बने ऐतिहासिक तिब्बत के अस्तित्व को मिटाकर पहले चीन ने इसे तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र नाम दिया था। अब इसका नाम बदलकर बीजिंग ने 'जिज़ांग स्वायत्त क्षेत्र' कर दिया है।

सीसीटीवी स्क्रीनशॉट में तिब्बत नाम का उपयोग किए बिना श्वेत-पत्र की घोषणा

२८ मार्च, २०२५ को जारी नवीनतम श्वेत-पत्र में आठ अध्याय और एक उपसंहार टिप्पणी शामिल है। यह मानवाधिकारों और लोगों के लोकतांत्रिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों, संस्कृति, धार्मिक स्वतंत्रता और पर्यावरण की प्रभावी सुरक्षा के विषयों पर केंद्रित है। हालांकि, इसमें कई तथ्य छिपे हैं।

इसकी तुलना तिब्बत पर १९९२ में जारी पहले श्वेत-पत्र से करें। उसका शीर्षक था, 'तिब्बत का स्वामित्व और मानवाधिकार की स्थिति।' भले ही इसमें कितनी भी झूठी बातें हों, कम से कम इसमें तिब्बत के बारे में तो बात की गई थीं।

अधिकारों का दिखावा

२०२५ श्वेत पत्र इस कथन के साथ शुरू होता है:

अपने मानवाधिकारों का पूरी तरह से उपभोग करना व्यक्ति की आम मानवीय आकांक्षा होती है। यह चीन के सभी नस्लीय समूहों के लोगों का भी लक्ष्य है, जिसमें ज़िज़ांग स्वायत्त क्षेत्र के लोग भी शामिल हैं।

काश यह सच होता

हां, यह कथन संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा, यहां तक कि चीनी संविधान को भी प्रतिध्वनित करता है, जिस पर चीन ने भी हस्ताक्षर कर रखा है। लेकिन क्या चीनी शासन वही करता है जो वह उपदेश दे रहा है?

असलियत यह है कि चीन जिन अधिकारों को सुरक्षित रखने का दावा करता है, उन्हीं अधिकारों की मांग करते हुए १५८ तिब्बतियों ने अब तक आत्मदाह कर लिया है। चीनी लोगों के लिए इन्हीं अधिकारों की मांग करते हुए नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित लियू शियाबाओ २०१० में मर गए। तिब्बती लोगों को अभी भी दलाई लामा की एक तस्वीर रखने या तिब्बती भाषा, संस्कृति और धर्म के महत्व के बारे में बात करने के लिए प्रताड़ित किया जाता है या गायब कर दिया जाता है। चीनी शासन परम पावन दलाई लामा और तिब्बतियों को अलगाववादी और चीन विरोधी कहकर अपमानित करता है। वह चीनी लोगों को गलत जानकारी देने की भी कोशिश करता है।

चीन ने २००८ के तिब्बती प्रस्ताव, जिसमें तिब्बती लोगों के लिए वास्तविक स्वायत्तता पर ज्ञापन दिया गया था, को अपने नागरिकों से छिपाया है। चीन के साथ सह-अस्तित्व के लिए शांतिपूर्ण 'मध्यम मार्ग' दृष्टिकोण को भी चीनी सरकार द्वारा सेंसर किया गया है, जो सरकार के पारदर्शिता और बहुलवाद के दावे को झुठलाता है।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षो से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

तुलकू हुंगकर दोरजे की संदेहास्पद मौत पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की प्रेस कॉन्फ्रेंस

चीन ने हालिया श्वेत पत्र में तिब्बत का नाम ही मिटा दिया